VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध
ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: ***Three*** *Hours*

टेस्ट कोड / Test Code : 2488

अधिकतम अंक: ***250***
Maximum Marks: ***250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 0546705

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : Arpit Kumar

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English
Hindi

तारीख
Date
25/08/23

निबंध
ESSAY

केंद्र
Centre Delhi

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

VISIONIAS

	महत्वपूर्ण अनुदेश	Important Instructions
	उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।	**Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISION IAS

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे	टेस्ट कोड : 2488	अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours	Test Code : 2488	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISION IAS

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।
It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।
A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।
Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।
History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

टूटे हुये वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है

1947 में भारत एक सदी से अधिक की दासता से आजाद हुआ था किंतु यह आजादी अपने साथ विभाजन की विभीषिका भी लायी थी। तत्कालीन भारत में लाखों परिवारों ने पाकिस्तान की ओर जाने का निश्चय किया था किंतु हामिद का परिवार दिल्ली की यादों को छोड़कर नहीं जा सका। हिंसा तथा प्रतिहिंसा की आग में हामिद का परिवार भी आ गया और उस सात वर्षीय बालक

ने अपनी मासूम आँखों से अपने पडोस के चाचा, ताऊ, अंकल को सांप्रदायिक होते देखा। सात वर्ष की अबोध उम्र में ही हामिद से उसके पिता का साया उठ चुका था; अब वह एक गुरुद्वारे में आश्रय पाता है। जीवन के क्रम में आगे जहाँ उसका परिवार उस सांप्रदायिक हिंसा को भुलाने में कभी समर्थ नहीं हो सका वहीं हामिद अपने बाल्यावस्था की उन दुखद स्मृतियों को पीछे छोड़ते हुए भारतीय प्रशासनिक सेवा का सदस्य बनता है। हामिद ने अपने संपूर्ण जीवन काल में गंगा जमुनी तहजीब की सांस्कृतिक मान्यता को सर्वोपरि रखा।

उपर्युक्त जीवन प्रसंग हमारे शीर्षक में निहित मर्म को उद्घाटित करता है कि जहाँ हामिद के परिवार के टूटे हुए वयस्क उस हिंसा से उबर नहीं सके वहीं हामिद का बालपन न केवल हिंसा का साहसिक सामना किया बल्कि दोनों संस्कृतियों के समागम का वाहक भी बना। कई अन्य कारकों के साथ साथ दोनों अनुभवों में उम्र तथा अवस्था एक निर्णायक कारक थी।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

शीर्षक के मर्म को उद्घाटित करने के पश्चात अब हमें यह समझ लेना चाहिए कि वयस्कता और टूटे हुए वयस्क की अवस्था से क्या अभिप्राय है? भारतीय मान्यताओं के अनुसार 25 वर्ष की अवस्था के पश्चात की अवधि वयस्क अवधि होती है। उम्र बढ़ने के साथ साथ वयस्कता और प्रौढ़ व परिपक्व होने लगती है। वर्तमान जीवनशैली में 60 वर्ष तक का समय मोटे तौर पर वयस्कता के प्रौढ़ होने का समय है।

इस अवस्था में व्यक्ति का समाजीकरण काफी हद तक हो चुका होता है: वह कुछ मूल्यों, मान्यताओं में विश्वास रखता है। यथा- एक आम भारतीय वयस्क संयुक्त परिवार, व्यवस्थित विवाह आदि मान्यताओं में विश्वास रखता है। वयस्कता की अवधि में व्यक्ति का अपनी मान्यताओं, आस्था आदि में दृढ़ विश्वास होता है।

टूट जाना एक प्रतीकात्मक उक्ति है इसका आशय व्यक्ति का हताशा से भर जाना: जीवन के प्रति चाह का न होना,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

आकर्षण की समाप्ति तथा यांत्रिकीकरण जैसी अवस्था में आ जाने से है। ऐसा तब होता है जब हम अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं और विभिन्न कारणोंवश उन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाते। टूटन की इस अवस्था को निम्न पंक्तियों के माध्यम से बखूबी समझा जा सकता है-

कैसी विचित्र जिंदगी है
जिसे मैं जीता हूँ
एक कपड़ा जिसे मैं सिलता हूँ
वह उतना फटता जाता है।

इसके विपरीत बचपन जीवन का प्रारम्भ है, उसमें ऊर्जा है, वह भविष्य के प्रति आकर्षण से भरा होता है। साथ ही बचपन अपने अंदर अथाह रचनात्मकता तथा जिज्ञासा समेटे होता है। यह बचपन ही होता है जब हम आसमान में देखकर सोचते हैं, प्रश्न करते हैं कि तारे क्यों टिमटिमाते हैं? सेब का फल आखिर नीचे ही क्यों गिरा? कुल मिलाकर बचपन या बाल्यावस्था सृजन की अवस्था है, जो आकार देने हेतु

सर्वोत्तम समय है और डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने कहा भी है कि-

"जीवन में सफलता हेतु रचनात्मकता अत्यावश्यक है और यह रचनात्मकता बाल्यवास्था में प्रचुरता के साथ उपस्थित है। अतः प्राथमिक स्कुल के शिक्षकों द्वारा इसे वांछित आकार दिया जाना चाहिए।"

दोनों अवस्थाओं को समझने के पश्चात अब हमें यह देखना होगा कि मजबूत बच्चों का निर्माण तुलनात्मक रूप से क्यों आसान है? साथ ही क्यों हमें टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने में अपेक्षाकृत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है?

तो इसका मुख्य कारण दोनों अवस्थाओं का अंतर है। जहाँ टूटा हुआ मन या टूटा हुआ वयस्क जीवन में कई अनुभव कर चुका होता है और इन अनुभवों ने उसकी जिजीविषा को तोड़ा है, उसे हराया है। यह पर्याप्त होता है कि वह आगे यथास्थिति को स्वीकार कर ले और एक उबाऊ, निराश जीवन जीने को अभिशप्त हो जाए।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
सब कुछ सहन कर जाना
जाना रोज काम पर
और लौट कर घर को आना॥

प्रेमचंद का प्रतिनिधि उपन्यास गोदान का मुख्य पात्र होरी इसी मुर्दा शांति से भर जाता है और एक टूटे हुए मन के साथ अभिशप्त जीवन जीता है।

टूटा हुआ वयस्क कई अनुभवों से मिलकर बनता है और कई अनुभव इतने कटु होते हैं कि वह उनका प्रतिकार नहीं कर पाता जो मरम्मत हेतु आवश्यक होती है। भारत में दलित ऐतिहासिक वंचना का शिकार रहे हैं। अधिकांश के अनुभव इतने कटु थे कि वह टूट गये थे और जहाँ दलित समुदाय बहुमत में भी था वहाँ भी वह शोषण का प्रतिकार न कर सका। वह इतना अधिक टूट चुके थे कि उनकी मरम्मत आसान नहीं थी।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इस कठिनाई का एक और मुख्य कारण समाज की अपेक्षाएँ या यूँ कहें सामाजिक दबाव होता है। सभी समाजों में भारत से लेकर यूरोप तक वयस्कता, अर्जन करने की अवस्था है। जब इस गलाकाट प्रतियोगिता में कोई वयस्क समाज के, परिवार तथा सगे संबंधियों के मानकों पर खरा नहीं उतरता तो वह भी टूट जाता है। और अगर वह अदम्य जिजीविषा नहीं रखता तो उसकी मरम्मत एक कठिन कार्य साबित होता है।

किसी भी समाज में सर्वाधिक आत्महत्या युवा व वयस्क वर्ग में ही घटित होती है। यह उस टूटन का प्रत्यक्ष परिणाम है। वयस्क अवस्था तक आते आते हमारे मूल्य, विश्वास अपेक्षाकृत इतने प्रगाढ़ हो जाते हैं कि उनमें परिवर्तन आसान नहीं होता और अगर हम टूट गये हैं, हताश हैं, निरर्थकता बोध से भरे हुये हैं तो यह समझ लीजिए यह मरम्मत किसी अंतर्ग्रहीय मिशन से कम कठिन नहीं है।

इन सभी बातों को समझने के पश्चात अब हम अपने दूसरे प्रश्न पर आते हैं कि टूटे हुए वयस्क की मरम्मत की अपेक्षा मजबूत बच्चों का निर्माण आसान क्यों है?

बच्चे समाजीकरण की प्रक्रिया का प्रथम सोपान होते हैं, कोई भी समाज अपनी मान्यताओं के अनुसार बच्चों के मन को आकार दे सकता है। यथा अमेरिका में उद्यमिता अत्यंत सम्माननीय है अत: वहां के बच्चों में उद्यम को लेकर अद्‌भुत सकारात्मकता होती है।

दूसरा प्रमुख कारण किसी भी ऐतिहासिक संचय का अभाव है। बच्चों के मन में अनुभव कम होते हैं या यूं कहें बच्चों का जीवन कोरा कागज होता है। इस कागज में वैसे ही चित्र बनेंगे जैसा आप बनाएंगे। जहाँ टूटे हुए वयस्क की मरम्मत में चित्र को बिगाड़कर बनाना है वहीं बच्चों में एक उजले कैनवास पर रंगों से आकार देना है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर का बालपन वैसा ही उजला कैनवास था जिसमें समानता, स्वतंत्रता तथा भ्रातृत्व जैसे मूल्यों ने आकार पाया। अपने समुदाय के विपरीत इन्होंने आकार ग्रहण करने के पश्चात हर प्रकार के संघर्ष का प्रतिकार किया।

वयस्क अवस्था में जहाँ हम लाभ-हानि की गणना के पश्चात कोई कार्य करते हैं वहीं बाल्यावस्था सिर्फ सीखने हेतु या करने हेतु कार्य करती है। बच्चों का एकमात्र ध्येय अपनी जिज्ञासा को शांत करना होता है और अगर यह जिज्ञासा एक अच्छे गुरु को प्राप्त हो जाए तो वह एक दृढ़ और स्थायी चरित्र का निर्माण करती है।

ऐसा ही एक बालक था नरेंद्र, जो जीवन के प्रति आकर्षण और जिज्ञासा से चालित था। रामकृष्ण परमहंस का सान्निध्य मिलने से वह जिज्ञासु बालक स्वामी विवेकानंद बन गया।

उम्मीदवारों को इस [redacted]ए में नहीं लिखना चाहिए
Candidate must not write on this margi

अगर हम अपने शीर्षक को और वैध विस्तार दें तो हम पायेंगे कि बचपन एक समयावधि है जो मनुष्य के साथ-साथ किसी भी सत्ता की हो सकती है। यथा राष्ट्र की बाल्यावस्था, किसी खेल टीम के शुरुआती वर्ष या किसी संस्था का प्रारंभिक समय।

उदाहरणस्वरूप 1775 में अमेरिकी क्रांति घटित हुयी। अमेरिका उस समय फ्रांस के समक्ष शिशु ही था जिसने नया आकार लिया था। किंतु अमेरिका की यह क्रांति बाल्यपन का सर्वोत्तम उदाहरण है जो परिवर्तन हेतु उत्सुक थे, जो नवीनता की ओर आशान्वित थे। आगे इसी अमेरिकी क्रांति ने कुछ वयस्क राष्ट्रों यथा फ्रांस, रूस आदि को प्रेरणा दी।

हालांकि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बच्चों के जीवन को आकार देने में या उन्हें मजबूत बनाने में मुख्य भूमिका समाज की ही होती है।

उम्मीदवारों को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

समाज ही वह मंच है जहाँ हम सीखते हैं, प्रयोग करते हैं और आकार लेते हैं। यह अर्जुन का ही कौशल तथा पांडवों की साहसिक प्रवृत्ति थी जिसने अभिमन्यु को आकार दिया।

कहने का आशय यह है कि जब समाज बच्चों को मजबूत आकार दे सकता है तो उसे स्वयं के आकार, मूल्यों, मान्यताओं को समय समय पर परखना चाहिए। टूटे हुये वयस्कों की मरम्मत भी अंततः मजबूत बच्चों का निर्माण करती है क्योंकि बच्चे अपने परिवेश से सीखते हैं और टूटे हुये वयस्क भी परिवेश का भाग हैं।

"संपूर्ण विश्लेषण को यदि संक्षिप्त में कहा जाये तो यह नितांत सही है कि टूटे हुये वयस्क की मरम्मत की अपेक्षा मजबूत बच्चों का निर्माण आसान है। चित्त को बिगाड़ कर

ठीक करने की अपेक्षा चित्र को नये सिरे से बनाना हमेशा से आसान रहा है। हालांकि नये चित्र में भी यह ध्यान रखना होगा कि उसके रंग प्रगतिशील हों, समावेशी व आधुनिक हों। साथ ही

समाज की इकाई के रूप में हमारा कार्य सिर्फ नये की रचना तक सीमित नहीं है बल्कि पुराने को, पीछे छूट गये को साथ लाना भी है। और यदि हम अपने बचपन को अपने अंदर जीवित रखेंगे तो हम कितना भी टूट गये हों, मरम्मत असाध्य कभी नहीं होगी।"

"माना घनी अंधेरी रात है
पर दीया जलाना कब मना है"

"हर बच्चे में एक हामिद होता है और हर टूटे हुये वयस्क में एक हामिद होने का अवसर छुपा होता है। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व के रूप में हमें मात्र उसे आकार देने में सहयोग करना है।"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidate must not write on this margin

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखायी नहीं देगी।

कोविड-19 पृथ्वी पर सदी में घटित होने वाली सर्वाधिक गंभीर आपदा थी। विकसित-विकासशील, धनी-गरीब, बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक, युवा-वृद्ध सभी इसकी चपेट में थे। यह सभी के लिए चुनौती था किंतु भारत जैसे राष्ट्र जहाँ जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है तथा स्वास्थ्य सुविधाएँ मानकों के अनुरूप नहीं हैं, वहाँ तो यह

राष्ट्र के समक्ष अस्तित्व का संकट था। भारतीय स्वास्थ्य कार्मिक तथा संपूर्ण जनसंख्या ने इस आपदा का सर्वोत्तम संभव तरीके से सामना किया। भारत ने अपना ध्यान अपने संसाधनों, मानवीय क्षमताओं तथा कूटनीति पर लगाया न कि संसाधनों के अभाव, ग्रामीण-शहरी स्वास्थ्य सेवा विभाजन की आड़ में निष्क्रियता प्रदर्शित की। अंत में भारत द्वारा कोविड-19 का प्रबंधन विश्व के अग्रणी स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचा सक्षम राष्ट्रों से भी बेहतर था।

यह प्रसंग हमें बताता है कि सर्वाधिक से सर्वाधिक गंभीर आपदा के क्षणों में भी यदि हम सकारात्मक हैं तो हम बेहतर प्रदर्शन कर पायेंगे। रोशनी अर्थात प्रकाश की ओर देखने से हम नकारात्मकता से बचे रहते हैं और अपना संपूर्ण ध्यान अपने प्रदर्शन पर लगाते हैं जिससे हमारे पास छाया देखने का अवसर नहीं होता।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

हमारे शीर्षक का मूल प्रतिपाद्य सामने आने के पश्चात हमारे समक्ष विश्लेषण का बिंदु यह है कि अपना चेहरा रोशनी की ओर रखने से क्या अभिप्राय है? रोशनी की ओर देखने से हमें छाया न दिखने से क्या लाभ है? और क्या यह सर्वथा वांछित है कि हमें छाया नहीं दिखे?

बाल्यावस्था में हम अपने विद्यालयी जीवन में खुले प्रांगण में प्रार्थना करते हैं और हमारे चेहरे के सम्मुख सूर्य, उगता हुआ सूर्य होता है। उसकी लालिमा, उसमें निहित ऊर्जा हमें गति प्रदान करती है और हम सारा दिन एकाग्रचित रहकर पठन पाठन में संलग्न रहते थे।

यहाँ पर रोशनी का एक अर्थ तो प्रकाश है, विज्ञान के नियमों के अनुसार जब हम रोशनी के सम्मुख चेहरा करके खड़े होते हैं तो हमारा

सामना हमारी छाया से नहीं होता। किंतु हमारे शीर्षक का एक विस्तारित अर्थ भी है कि यदि हम अपना ध्यान सकारात्मक चीजों, प्रक्रिया तथा प्रगतिशील मूल्यों की तरफ रखेंगे तो हम अपने जीवन में सर्वश्रेष्ठ को प्राप्त करेंगे। हमारे अंदर नकारात्मक भाव तथा संशय उत्पन्न नहीं होंगे।

यहाँ पर, अपना चेहरा रोशनी की ओर रखने से यही अभिप्राय है। जब हम सकारात्मक आयामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमें ऊर्जा प्राप्त होती है और अंततः हमारा प्रदर्शन भी वांछित होता है। मूर्त रूप में कहें तो हर एक परीक्षार्थी के मन में परीक्षा के कुछ दिन पहले यह संशय उत्पन्न होता है कि उसने बहुत कुछ नहीं पढ़ा; उसके पाठ्य-क्रम का यह हिस्सा अभी बाकी है। इनमें से वे परीक्षार्थी जो अपना

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

ध्यान इससे आगे बढाकर इस पर केंद्रित करते हैं कि उन्होंने पर्याप्त मात्रा में अध्ययन किया है और वह पढे हुये पाठ से आये प्रश्नों को गलत नहीं करेगा। और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इसरे प्रकार के विद्यार्थी परीक्षा में अधिक सफल होते हैं।

जब हम प्रकाश की ओर देखते हैं तो हमें रात के उस अंधेरे का सामना नहीं करना पडता जो हमारे अंदर संशय, भय, विकलता पैदा करता है। सूर्य की रोशनी हमें ऊर्जा देती है और यह संदेश भी कि वह निरंतर निश्चत समय में उदित होता है। यह हमें हमारे जीवन में आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करता है। कार्य के समय हमें आशंकाओं से डर रखता है और यदि दुर्भाग्यवश हमें प्रतिकूल परिणाम मिलता है तो यह हमें एक नये प्रयास के लिये प्रोत्साहित भी करता है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उदाहरण के रूप में 1946 में जब भारत अपने भाग्य की संघर्षरत अवस्था का सामना कर रहा था, वहीं एक हॉल में बैठे संविधान सभा के सदस्य राष्ट्र की नियति को आकार दे रहे थे। अगर उन विभूतियों ने सांप्रदायिक हिंसा, विभाजन, सत्ता लोलुपता आदि की ओर देखा होता तो क्या यह जीवंत संविधान और एक मजबूत राष्ट्र विश्व के सामने आ पाता? संभवतः नहीं।

पृथ्वी की शुरुआती वर्षों में भी अंधकार था, यह बिग बैंग ही था जिसने ब्रह्माण्ड को अवलोकित, प्रकाशित किया। आगे आदिमानव ने पत्थरों से आग का आविष्कार किया। आग की वह ज्वाला, रोशनी ही वर्तमान जीवन विकास के मूल में है। हमारे पूर्वजों का वह प्रकाश की ओर देखना ही था जो आग के आविष्कार से लेकर आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक हमें लाया है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

रोशनी की ओर देखने से एक आशय प्रगतिवादिता भी है। ऐसे मूल्यों में विश्वास भी है जो लोकतांत्रिक हों तथा प्रकृति में समावेशी हों।

यूरोप में मध्यकाल को 'डार्क एज' की संज्ञा दी जाती है, यह पुनर्जागरण का काल ही था जब रूसो, माण्टेस्क्यू आदि दार्शनिकों ने न केवल स्वयं प्रकाश की ओर देखा बल्कि यूरोप के साथ साथ संपूर्ण विश्व को रोशनी की ओर देखने हेतु प्रेरित किया। इसकी परिणति भारत में भी हुयी किंतु वह नवजागरण था। राजाराम मोहनराय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि समाज सुधारकों ने संपूर्ण भारतीय समाज को अपना चेहरा रोशनी की ओर रखने में मदद की।

यहाँ एक और विचारणीय मुद्दा यह है कि यदि हम अपना चेहरा रोशनी की ओर नहीं रखते तो क्या हमें कुछ हानि भी होगी? यदि हम

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

रोशनी की ओर उन्मुख नहीं होंगे तो स्वाभाविक है हम छाया व अंधकार के साक्षी होंगे। अंधकार हमें भय, विकलता आदि सिखलाता है। भारतीय दर्शन में तो अंधकार में सभी कार्य निषिद्ध माने गये हैं। इन सभी की परिणति एक ऐसे समाज में होती है जो अपनी क्षमताओं को साकार करने में असमर्थ होता है। महाभारत के दुर्योधन तथा रामायण में रावण, जिसकी पूरी लंका ही 'अंधकारमय' थी वह सर्वोत्तम प्रतिबिंब है कि अंधकार उन्मुख व्यक्ति, समाज किस प्रकार पतन को प्राप्त करता है।

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥"

अर्थात मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो॥ आज संपूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन रूपी अंधकार को पहचान चुका है और वह अपने सामूहिक प्रयास से ज्योतिर्गमय अर्थात एक सुरक्षित पृथ्वी के निर्माण का प्रयास कर रहा है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidates must not write on this margin

विश्लेषण के क्रम में तीसरा प्रश्न यह था कि क्या छाया से बचना सर्वथा वांछित है? यहाँ पर छाया के कई अर्थ संभव हैं। प्रथम तो स्वाभाविक अर्थ हमारी परछाई, दूसरा ऐसे मूल्य, विश्वास जो रूढ़िगत होकर अवांछित हो चुके हैं, तीसरा व्यक्ति के भीतर तथा समाज में निहित कुरीतियों से है।

अगर इन सभी अर्थों पर विचार करें तो हम सहमत होंगे कि छाया या परछाई भी हमारा भाग ही है। यह कभी कभी हमें, हमारा स्वयं से सामना कराती है जैसे जंगल में एक शेर शावक खुद की पहचान भूल गया था और परछाई देखकर अपने स्वाभाविक गुणों से परिचित होता है।

साथ ही यदि कोई समाज प्रगतिशील तथा समावेशी होना चाहता है तो यह आवश्यक ही है कि वे

उम्मीदवारों इस हाशिए ना लिखना चाहिए
Candid must nc write or this ma

अपनी जड़गत मान्यताओं की पहचान कर पाये, उनका वस्तुगत तथा निष्पक्ष मूल्यांकन करने में समर्थ हो। अर्थात यदि हम समाज के रूप में समलैंगिकों, तृतीय लिंग जैसे वंचित वर्गों की ओर देख ही नहीं पायेंगे तो हम उन्हें मुख्यधारा में शामिल कैसे कर पायेंगे।

तीसरा, कभी-कभी अंधकार की ओर देखने से हमारा सामना असीम संभावनाओं से होता है। भारत ने अभी हाल ही में समुद्रयान मिशन की घोषणा की है, यह मिशन महासागर के घने अंधकार में मानवजाति हेतु संभावनाओं का परीक्षण करेगा। महासागर के उस अंधकार में निहित प्रकाश से परिचित होगा। इसी परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास जी ने कहा भी है कि,

"जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ॥"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

"अब अगर संपूर्ण वाकिये को सार रूप में कहना पड़े तो यह मानना ही होगा कि मानव सभ्यता का विकास उस प्रकाशमयी मार्ग पर चलते रहने से हुआ है। हमने जंगलराज से लेकर आज समावेशी, सर्वसुलभ परिवेश का निर्माण किया है तो यह उसी रोशनी की ओर देखने का परिणाम था। रोशनी हमें न केवल राह दिखाती है बल्कि साहस, अडिगता तथा निरंतरता भी देती है।

साथ ही विकास या प्रगति सिर्फ चलते जाने का नाम नहीं है, यह मनुष्य का अपनी परंपरा में आत्मविश्लेषण भी है। इसी मूल्यांकन हेतु कभी कभी यह भी आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी छाया का सामना करें। हालांकि यह तभी तक आवश्यक है जब तक यह मनुष्य की, मानवता की प्रगति में सहयोग करे।"

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

मरम्मत करने में

SPACE FOR ROUGH WORK, कल्पना, व्यायाम स्कूल

टूटे हुए वयस्क की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

अनुभव, पश्चाताप
मान्यताएं
विश्वास, अभिवृत्तियां
तर्क-वितर्क

कोरा कागज होते हैं,
कागज पर चित्र भरना आसान है।
बजाय कि मिटाने के

विभाजन की त्रासदी → a story.

~~Start from अंबेडकर & his community~~

मान लेते हैं कि आसान है:

(1) परिभाषित करो — वयस्कता

बालपन की नवीनता
जीवन के प्रति आकर्षण
- जिज्ञासा
- रचनात्मकता
- उत्साह

| examples इंग्ला |

टूटा हुआ वयस्क क्या होता है वो भी बताओ
- हार मानना
- निरुत्साह
- कटु अनुभव हो

⇒ आयाम बनाता हूँ
⇒ इ.रि. American revolution & french revolution
→ polity ⇒ युवाओं की भागीदारी
उच्च आकर्षण & प्रतिबद्धता होगी
→ Society ⇒ स्कूल, विज्ञान competition
अंबेडकर, Gandhi.

Religions :> समन्वयता सौहार्द सम्मान

SPACE FOR ROUGH WORK

History + mythology :> अभिमन्यु. बचपन बचाओ आंदोलन

Ecology :> movement :> विश्वास्तरीय आदित्य [eco friendly करने]

नये आधुनिक मूल्यों को सीखना

नवाचार (प्रज्ञानंद)

Administration :> बच्चों से भेंटक्रिया

So now रूपरेखा

- भूमिका

- एक रटा हुआ वयस्क में एकाकीपन जिंदगी कठिनाइयाँ + बच्चों में नवीनता

then प्रथम आयाम क्यों और कैसे सम्मत कठिन example

then 2nd आयाम बच्चों से कैसे आसान है + क्यों

3rd आयाम तो क्या हम वयस्कों पर focus नहीं करना चाहिए

4th बच्चों के बालपन को सुरक्षित रखना :> add करो अभिभावकों की महत्वाकांक्षाओं

then हाँ आसान है किंतु आवश्यक दोनों ही है यह तब ज्यादा अच्छी तरह हो पायेगा जब हम अपने बालपन को कभी खोयेंगे नहीं।

SPACE FOR ROUGH WORK

अपना चेहरा रोशनी —— हिंडा वेपी

सकारात्मकता · रचना · ऊर्जा · उत्साह

साहस ·

Intro :) कोरोना - 19 | भारत ·

⇒ राजनीतिक :) संविधान सभा ठीक है रखो but कभी २ चुनौतियां भी होनी चाहिए देखो भाभी ⇓ चंद्रयान-3

ऐतिहासिक :) स्वतंत्रता आंदोलन ·

सामाजिक :) साम्प्रदायिकता

आर्थिक :) भारत · चीन दोनों का example दो ·

पौराणिक :) भगवान राम का दे दो ·

प्रशासनीय :) संसाधन · भूमि सुधार · सामाजिक न्याय ·

खेल :) 1983 का world Cup ·

विज्ञान :) चंद्रयान · अपोलो ·